रिश्ते

श्री महामत कहें बैठ़ियां देख के, हक हसंत है हम पर।
कहें देखो इन विध खेल में, भेलियां रहें क्यों कर।।

प्यारे सुन्दरसाथ जी, प्रणामजी, प्रणाम जी, प्रणाम जी! परमधाम से रुहें माया का खेल देखने इस संसार में आई हैं, दो रिश्ते वहां से हमारे साथ ही यहां पर आए हैं, जो हमने पल पल निभाने हैं। एक रिश्ता तो हमने श्री राज जी से निभाना हैं, वह हमारे खाविंद हैं, हम उनकी अगंना हैं और माया में रहते हुए हर दुख सुख में पल पल हमने उनकों याद करना हैं, उनके चरणों में रहना हैं, वाणी के सहारे, चितवन के सहारे, परमधाम के २५ पक्षों के सहारे, धनी के सुखों को यहां पर पाना और उनकों रिझाना है।

दूसरा रिश्ता हमने सुन्दरसाथ से निभाना है। परमधाम में रुहें श्री राज जी का ही तन हैं, श्री श्यामा जी के अंग हैं, उनका एक चित, एक दिल, एक अक्ल हैं, मूल मिलावे में दाड़िम की कलियों की तरह उनकी बैठक है, कैसे एक दूसरे के गलें में बाहों में बाहें डाल कर लिपट चिपट कर बेठी हैं, एक दूसरी को जगाने के वायदे किये जा रहे हैं, उनकी बैठक देख कर श्री राज जी भी हंस रहे है कि देखते हैं, खेल में जाकर यह सब कैसे इकट्ठी रहती हैं। कितना अटूट नाता है रुहों का, अर्श का रिश्ता, सोच कर देखे तो एक अजीब सी सिहरन शरीर में दौड़ती दिखाई देती है, एक खुशी की लहर सी अन्दर नाचती है कि वाह भई वाह ऐसा रिश्ता हम सुन्दरसाथ का आपस में है।

प्यारे सुन्दरसाथ जी, बात यहीं पर खत्म हो जाती तो कुछ और ही बात होती, लेकिन बात तो यहां से शुरु हो रही है। आज जब कभी भी उपरोक्त दी गई चौपाई सामनें आती है, या हम कभी उस पर गौर करते हैं, तो सुन्दरसाथ का आपस में व्यवहार देख कर, एक हसीं सी दिल में आ जाती हैं, एक हूक सी दिल में उठ़ती है कि क्या वाकई हमारा इतना अटूट, अर्श का, वाहेदत का, एक दिली का नाता है, सच्चा नाता, प्रेम का नाता, अगर है तो क्या हम इसको थोंड़ी सी भी ईमानदारी से, सच्चाई से, दिल से, निभा रहे हैं या नहीं?

श्री राज जी महाराज परमधाम में हमारी बैठक देख कर हंस रहे हैं कि देखें खेल में जाकर यह सब कैसे इकट्ठी रहती हैं और हम माया में अपना हाल देख कर, ऐसी चौपाईयाँ सामने आने पर व्यगं रुप में हंस पड़ते हैं, धनी परमधाम में हम पर, हम माया में ऐसी चौपाईयों पर हंसते हुऐ बात एकदम बराबर कर रहें हैं क्योंकि अब तो माया से हमारे नये रिश्ते जन्म ले चुके हैं, अपना घर परिवार, बीवी (पत्नी) और बच्चे, यहीं है हमारी दुनियां, इनके लिए ही जीना मरना, इनके लिए ही दुनियां से लड़ना झगड़ना हमारा दुख सुख सब इनकें साथ है, आखिर हमारें मरने के बाद भी यह हमारे वारिस हैं।

Nijanand App

सुन्दरसाथ के रिश्तों का क्या हैं, उनको निभाने की भला क्या जरुरत हैं, जब परमधाम में इनको कोई नहीं तोड़ सकता तो यहां पर क्या डरना। आपस में कभी लड़ाई झगड़ा हो जाए तो फिर बुलाने की भी कोई जरुरत नहीं हैं, उसके घर जाने की तो बात सोचनी भी नहीं, आखिर कौन सा हम उससे मांग कर खाते हैं, इतना सब कुछ है तो फिर उससे प्रणाम बन्द करनी तो लाज़मी हैं। चाहे उसने मन्दिर में ही खड़े होकर बीसीयों बार प्रणाम की हो, जबाव देने की जरुरत ही क्या है, आखिर नाता जो अटूट है, रिश्ता टूट थोड़े ही जाऐगा, परमधाम में सब कुछ कायम ही रहेगा।

सुन्दरसाथ जी, यह है अर्श का दावा करने वालों की कहानी, आज सुन्दरसाथ में प्रेम बस नाम मात्र का ही रह गया है, सब कुछ दिखावा ही दिखावा सा लगता है। जिन रिश्तों की अहमियत हमारी जिन्दगी में माया के रिश्तों से कहीं ज्यादा होनी चाहिए, वह सब रिश्ते तो हमें एक मज़ाक सा लगने लगे हैं। एक टाईम पास अच्छी सोसाईटी की तरह हम केवल मन्दिरों और आश्रमों में उनको निभाते हैं। वहां पर हम उनके चरणों को छूते नहीं थकते, वहां पर सब अपने लगते हैं और आश्रम से लौटते समय ही अगर गाड़ी में कोई सुन्दरसाथ बगैर रिज़र्वेशन के हो तो हम उसको अपने पास बिठाने से भी हिचकिचाते है, अपने साथ थोड़ा स्थान देने की बात बहुत दूर हैं। इससे आगे हमारी निजी जिन्दगी में एक सुन्दरसाथ की दूसरे सुन्दरसाथ की मदद की जरुरत पड़ जाए, तो हम उसके दुख सुख से कोसों दूर हैं। बहानों की तो फिर ऐसी जगह पर जरुरत पड़ ही जाती है।

अपना एक सुन्दरसाथ है, श्री राजजी की मेहर से अच्छे ओहदे पर हैं, और सरकारी महकमें में भी जान पहचान हैं। एक सुन्दरसाथ ने किसी "मुसीबत" में उससें मदद मांगी तो उसनें बहानों से काम चला लिया, दोनों का आपस में प्यार भी बहुत ज्यादा था, इसलिए थोड़ी सी नाराजगी तो जरूरी थी। एक की सोच यह थी कि मैने तो इसको अपना समझ कर, सुन्दरसाथ का रिशता मान कर मदद मांगी थी इसने इन्कार कर दिया, क्या अर्श के नाते ऐसी ही होते हैं, दावा अर्श का और साथ फर्श का भी नहीं है। दूसरा सोचता है कि यह स्वार्थी है, मैनें इसकी माया की जरूरत पूरी नहीं की, इसलिए अब मेरे से यह कम बोलता है और वह भी कम बोलना शुरू कर देता है और मन में सोचता है कि शायद माया के काम पूरे करने के लिए ही इसने मेरे साथ प्यार डाला हुआ था। यहां पर गलत कौन, और सही कौन, इसके बारे में तो श्री राज जी जानते हैं, लेकिन यहां पर तो दोनों के प्यार में गांठ लग गई। वैसे देखा जाए तो माया के दुखों में जैसे हर कोई अपने खुदा को याद करता है, हम सुन्दरसाथ भी दुख में, मेहर सागर के पाठ करवाते हैं, ऐसे ही अगर एक सुन्दरसाथ मुसीबत में दूसरे सुन्दरसाथ से मदद मांग लेता है तो क्या गुनाह करता है। जो हम इसे एक स्वार्थ का रूप देते है यह किस्सा तो था

Nijanand App

दो ऐसे सुन्दरसाथ, का जिनका आपस में बहुत प्यार था अब उनकी बात सुनिये जिनका आपस में दोस्ताना तो (ज्यादा प्यार) नहीं था लेकिन सुन्दरसाथ का रिश्ता तो था। ऐसे ही एक सुन्दरसाथ ने मुसीबत में दूसरे सुन्दरसाथ से, किसी काम करवाने के लिये मदद मांगी। एक बार तो वह फौरन उसके साथ चलनें को तैयार हो गया, फिर दूसरे ही पल उसके दिल में ख्याल आया कि इस चक्कर में, जिससे काम लेना हैं (करवाना है), कल को मेरी दुकान पर आकर कोई सामान बगैरह ले गया तो उससे तो पैसे मांग नहीं सकता और दूसरी तरफ सुन्दरसाथ से मागूंगा तो मुफ्त का बुरा बननें वाली बात हो जायेगी। आखिर चलते-चलते उसने भी बहाने से काम चला लिया। ऐसे हालात में पीछे हटने की भला क्या जरुरत हैं, जिसका काम करवाने में पैसा खर्च होता है, उससे मांगने में कोई हर्ज नहीं होता क्योंकि जब मुसीबत आती है तो हर कोई यही सोचता है कि चाहे मेरा पांच सौ की जगह हजार खर्च हो जाए लेकिन मेरा काम तो हो जाए। मुसीबत तो टल जाए (दूर हो जाऐ) प्यारे सुन्दरसाथ जी, अपनों के लिए इन्सान क्या नहीं करता। लेकिन सुन्दरसाथ हमें अपना लगे तभी तो किसी की मदद को जाए। आखिर उनसें हमारा कोई खून का रिश्ता तो है नहीं। वैसे एक बार इसी सुन्दरसाथ का एक माया का दोस्त था, उस पर जब मुसीबत आई तो दिन रात एक करके दोस्ती की मिसाल कायम की गई थी लेकिन सुन्दरसाथ की औकात तो माया की दोस्तियों से भी गई गुजरी हो गई हैं। ऐसे किस्से जब देखने और सुनने को मिलतें है तो मन बहुत दुखी होता है। दुनिया के सब रिश्ते निभाए जाते है, लेकिन सुन्दरसाथ के रिश्तों में हमारी सोचें बहुत जल्दी बदल जाती हैं।

एक बहुत सेवा करने वाला सुन्दरसाथ था। उसके घर बहुत सुन्दरसाथ का आना जाना था और श्री राज जी की खूब बातें वहां पर होती थीं। उसका कहना था कि बड़े महाराज जी कहते थे कि श्री राजजी की सेवा एक तरफ और सुन्दरसाथ की सेवा एक तरफ हो तो सुन्दरसाथ की सेवा का पलड़ा भारी हैं। ऐसे ऐसे भाव रखने वाले सुन्दरसाथ को भी अपने ऊपर जरा सी भी बात आने पर सुन्दरसाथ के रिश्तों में तुरन्त अपनी सोचें बदलतें देखा हैं। मेरा इस बात का हवाला देने का मतलब यह हैं कि सुन्दरसाथ के रिश्तें की डोर इतनी कच्ची क्यों हैं, जो ऐसी बातों से टूट जाती हैं। हकीकत में गलती करने वाले सुन्दरसाथ को गले लगाने में जो आनन्द हैं, उसकी बात ही कुछ और हैं, श्री राज जी भी खुश होते है कि इसने सुन्दरसाथ के रिश्ते को सामने रखते हुए, माया में ऐसी चाल चली है लेकिन हम बहुत जल्दी अपनी सोच और अपना रास्ता बदल लेते हैं और अर्श के नातों को फर्श पर नहीं निभा पाते।

प्यारे सुन्दरसाथ जी, परमधाम में रुहों के तन प्रेम के हैं, उनकी बोली, खान पान, रहन-सहन, आपस का व्यवहार सब प्रेम का है। इसलिए माया में भी रिश्ता प्रेम और दर्द का

Nijanand App

ही होना चाहिए, लेकिन सच्चाई इससे कोसों दूर है। आज हालात ऐसे हैं कि काई सुन्दरसाथ दो चार महीने भी मन्दिर न आए और सुन्दरसाथ की भी किसी बैठक में न पहुंचे तो कोई भी उसके घर जाकर कुछ भी पूछनें की जरुरत नहीं समझता, किसी को कोई भी दर्द नहीं होता, चाहें कोई सुन्दरसाथ जितना मर्जी पीछे पड़ता जाए। आज सुन्दरसाथ में प्यार है तो केवल एक दोस्ताना स्टाइल में हैं। जिस किसी से हमारी दोस्ती होगी या जिस किसी से हमारी बैठक जमती होगी, वहां पर थोड़ा सा प्यार नजर आयेगा। लेकिन वह प्यार सुन्दरसाथ के रिश्ते और दर्द का नहीं बल्कि अपनी दोस्ती, अपनी अपनी बैठक और ग्रुपबाजी का नजर आता हैं। अपने अपने शहर के सुन्दरसाथ में थोड़ा-थोड़ा (कुछ-कुछ) प्यार नजर आयेगा, दूसरे शहर का सुन्दरसाथ हो तो खाली प्रणाम जी, प्रणाम जी, बस इतना ही काफी है। अगर दूसरी स्टेट का सुन्दरसाथ हो तो वह हमारे लिए अजनबी हैं, उससे क्या बात करनी और कहीं उनका खान, पान, रहन, सहन, थोड़ा हमसे अलग हो तो उनकी सेवा हमारे लिए सेवा बोझ बन जाती हैं। ऐसे सुन्दरसाथ की आश्रम में मौजूदगी भी, हमें चुभने सी लगी हैं। कहीं पर भी बड़े छोटे का, अपने पराऐ का कुछ भी लिहाज नहीं हैं। जिन सुन्दरसाथ के हम आगे पीछे घूमतें हुए, जी-जी, किया करते थे उन्हें पूरा मान सम्मान देते थे, आज वहीं हमें हमारे रास्तें के पत्थर बने नजर आते हैं। कदम कदम पर जिनसे हम सलाह मशवरा किया करते थे, आज उनसें पूछकर काम कोई भी काम करना हमें अपनी बेज्जती लगती हैं कदम कदम पर हम एक दूसरें से बदला लेना चाहते हैं। बदलतें वक्त के साथ साथ हम भी अपनी मर्जी के मालिक बन गए हैं। अब तो वक्त आया है कि हम भी कुछ ताकत हैं, यह सबको दिखाया जाए। कोई हमारे सिर पर एक टांग पर खड़ा हमें देख रहा हैं, इस बात का अहसास हमें नहीं रहा जो हमारे सिर पर खड़ा हैं, हमारे दिल में हमारी नस-नस में समाया हैं, उससे प्यार करने वालो से हम प्यार करें, आपस में प्रेम और दर्द का रिश्ता रखें इसमें ही उसकी खुशी है, इस बात का अहसास हमे नहीं रहा। आज तो ऐसा वक्त भी आया है कि कुछ सुन्दरसाथ आश्रम आना ही छोड़ चुके है, छोड़ने की बातें करते है, क्योंकि वह कुछ सुन्दरसाथ के व्यवहार से, और कुछ सेवा कर रहें सुन्दरसाथ से हुई गलतियों के कारण नाराज हैं। हमारे ऐसा करने से दुखी कौन हो रहा हैं, आज इस बात का अहसास हमें करना हैं तो आइए हम सब बैठते है सरकार श्री जी के चरणों में।

मेरे सरकार श्री जी, प्रणाम जी, प्रणाम जी, प्रणाम जी, हमारी माया में कैसी चाल हैं, आपसे कुछ भी छिपा नहीं हैं आज हमें लगता है कि हम अपना जन्म गंवा बैठे है, हम आपसे कुछ भी नही ले पाए। बस, "भूल गए सब कुछ, याद नही अब कुछ" वाली कहावत सिद्ध की हैं। हम आपकी दिखाई किसी भी राह (रास्ते) पर नहीं चल सके। आपने कितनी बार हमें कसमें खिलाईं, कि सुन्दरसाथ जी एक घण्टा रोज बाणी मंथन करो, हमनें कसमें खाईं और

Nijanand App

हजम भी कर गए। अब तो हम श्री राज जी की झूठी कसमें बड़े शौक से खा सकते है, क्योंकि हमारे लिए यह कोई नई बात नहीं रहीं। आपने हमें चितवनी करने के लिए कहा। आप चितवनी पर जोर देते रहे, आप हमें २५ पक्षों में घुमाना चाहते हैं हमें हमारे घर की याद दिलाना चाहते हैं, लेकिन हमारा चित अभी माया में ही घूमना चाहता हैं और रिजल्ट यह कि हमें लगता है कि अगर हम आपके कहने पर चलेगें तो और तो कुछ नहीं होगा, हमारी नीदं जरुर खराब होगी। आप ने हमें रहनी पर चलने के लिए कहा कि सुन्दरसाथ जी रहनी में आइए, अब कहनी और सुननी का वक्त नहीं रहा। आप हमें परमधाम में हांसी से बचाना चाहते हैं। हम इस बात को भी हजम कर गए और रिजल्ट यह कि हम (खास कर मैं) ऐसा सोचतें है कि अगर परमधाम में हमारी हांसी हुई तो कौन सा कोई बाहर से आकर हम पर हसेंगा, श्री राज जी ही तो हसेंगे, फिर क्या हुआ। यानि पक्के ढीढ़ हो चुके हैं।

सुन्दरसाथ जी दो रिश्तों की बात चल रही थीं एक रिश्ता तो श्री राज जी से हमे निभाना था, वह मैं तो इस तरह से निभा रहा हूँ, बाकी सब कोई अपनी अपनी खुद जानता है। दूसरा रिश्ता सुन्दरसाथ से निभाना था, वह भी सब आपके सामने ही है कि कितने दर्द के साथ उसको निभाया जा रहा हैं।

सरकार श्री जी, आप ने तो सुन्दरसाथ की सेवा को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया, सुन्दरसाथ की सेवा में ही अपना तन मन कुर्बान किया और उनकी सेवा में ही अपनी हड्डियों का सुरमा बनाया। आपने सुन्दरसाथ के प्रेम को ही अपनी खुराक बनाया, आपको हमेशा सुन्दरसाथ के दर्शनो की ही चाह रही, उनके हर दुख सुख में आप पहुचें और हर सुनदरसाथ की दुख सुख में उनकी मदद की। सुन्दरसाथ के दुखों का हरण कर अपनें तन पर उनकों लिया। आपने तो सुन्दरसाथ को प्रेम और सेवा का मार्ग खाली बताया ही नही बल्कि खुद उस पर चल कर भी हमें समझाया और दिखाया लेकिन हम फिर भी कुछ नहीं ले सकें। हमने रिजल्ट इससे उल्टा ही निकाला, हमनें सोचा कि सरकार श्री जी की तो हर सुन्दरसाथ से परमधाम की निसबत है, उनके साथ उनका अर्श का रिश्ता है, हम सुन्दरसाथ का उतना ही रिश्ता एक दूसरे से थोड़े ही है, इसलिए हमें किसी के दुख सुख से, किसी की मदद करने से क्या लेना है और हमारा प्रेम खाली मन्दिरों तथा आश्रमों तक ही सीमित रह गया, लेकिन वहां पर भी वह सुचारु रुप से नही चल सका। वहाँ पर भी लड़ाई-झगड़े चलते रहते हैं। आगे सेवा का मतलब हमने यह निकाला कि जिस काम में हमारी सेवा लगी है वहा पर ड्यूटी पूरी कर दी यानि सेवा का मतलब डयूटी, सुन्दरसाथ की पहचान और सेवा का भाव ही नहीं होता तो फिर डयूटी करते समय प्रेम कहां से आऐगा और निष्पक्ष रुप से सेवा हम कैसे करेगें। डयूटी में तो अपनी जानपहचान वाले ही नजर आयेगें, उनकी सेवा में कोई कमी, या उनकी नाराजगी नहीं

Nijanand App

होनी चाहिए बाकी खैर सलाह, उनका रब मालिक, चाहें किसी का दिल टूटे उससे हमें क्या लेना देना हैं।

सरकार श्री जी, आपके जीवन का लक्ष्य प्रेम और सेवा, इन पर भी हम खरे नही उतर सके बल्कि जरा सा भी हम नहीं चल सके। अब इससे ज्यादा आपको आपना क्या हाल बताएं। हमने तो आपके नाम से बन रहे स्मृति भवन को भी नहीं छोड़ा। भवन को बनवानें की सेवा कर रहें सुन्दरसाथ पर भी हमने बीसियों आरोप लगाते हुए अपने प्रेम का सबूत दिया हैं। और आपके प्रति दिल खोल कर हार्दिक प्यार जताया है ताकि आपकी शुभकामनाऐं हम तक पहुँचती रहें और आपका दिल हमारे प्रेम और सेवा को देख कर बाग बाग हो उठे।

इस तरह से हमने अपना दूसरा रिश्ता, अर्श का रिश्ता जो हमारा सुन्दरसाथ से है उसको बखूभी निभाया है। अब हम सरकार श्री से निडर होकर कह स्कते है कि जो आपने हमें नही सिखाया, हम वह भी सीख चुके हैं। आपकी वाणी तो हमें दो रिश्तो पर चलनें का मार्ग बताती है, हम तो माया को भी अपना रिश्तेदार बना चुके है। फिक्र है तो बस इतनी कि परमधाम में इसकी "ENTRY" प्रवेश कैसे हो, ताकि जब हम वहां पर उठें तो, हम गर्व से कह सके कि श्री राज जी हम अर्श के दो नहीं बल्कि तीन रिश्ते निभा कर आए है। (तीसरा रिश्ता माया का)

प्रणामजी!

बंसी, अमृतसर

श्री जी साहिब जी सरकार साहब

'परना धाम'

दिल अपना है, हरदम निसार-ए-परना
मोमिनो का सूरमा, गुरबार-ए-परना
गुम्मट वो कि अर्श भी सर झुका ले
ग़र देख ले वो कोहसार-ए-परना
मिला जब तू अर्श में मशकूर तेरे
वो भी ग़र देख लेते बहार-ए-परना
नाज़ है परने का हर जर्रा-जर्रा
वो भी चूमे कदम ताजदार-ए-परना
मर्शरत खुशी से मेरी ईद होगी
ग़र देख लू फिर धाम-ए-परना
परने को जाके ही जाँ अपनी देता
कर लिया जाये किस्मत से दीदार-ए-परना

नरेश टण्डन - जलंधर शहर

Nijanand App